इकाई 7 जाति, वर्ग और जेन्डर पहलू*

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 जाति और नातेदारी

7.2.1 समानार्थी रूप में जाति और नातेदारी

7.2.2 अलग–अलग प्रणाली के रूप में जाति और नातेदारी

7.2.3 जाति–नातेदारी संबंधः केस अध्ययन

7.3 वर्ग और नातेदारी

7.3.1 वर्ग के पार नातेदारी

7.3.2 नातेदारी का आंतरिक पहलू

7.3.3 वर्ग–जेन्डर व नातेदारी

7.4 जेन्डर और नातेदारी

7.4.1 नातेदारी अध्ययन में जेंन्डर का विलोपन

7.4.2 नारीवादी योगदान

7.4.3 नातेदारी अध्ययन में नई दिशा

7.5 सारांश

7.6 संदर्भ

7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

*योगदानः डॉ अर्चना प्रसाद, कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद, आपः

- नातेदारी और जाति के अंतर–संबंध और आंतरिक पहलू की विवेचना कर सकेंगे;
- यह बता पाएंगे कि वर्ग नातेदारी प्रणालियों पर किस तरह प्रभाव डालता है;
- नातेदारी के जेन्डर पहलू को समझने में नारीवाद के योगदान पर ध्यान दे सकेंगे; और
- विभिन्न सामाजिक श्रेणियों और नातेदारी के आंतरिक पहलू को समझने के लिए भारत की क्षेत्रीय भिन्नताओं के कुछ उदाहरणों पर नज़र डाल सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

इस इकाई में हम जाति वर्ग और जेन्डर (Gender–लिंग) के पहलुओं और नातेदारी से इनके आंतरिक पहलू के बारे में जानेंगे। इन पहलुओं में से प्रत्येक पहलू नातेदारी संबंधों पर प्रभाव डालता है, और इसलिए अंतः आंतरिक पहलू को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

नातेदारी के प्रारंभिक अध्ययनों का मुख्य केंद्र वंशिक (Genealogical) और वैवाहिक (Marital) योजकों का अनुरेखण करना था, जाति, वर्ग व जेंडर की जटिलताओं पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया गया। सांस्कृतिक (Culture) दृष्टिकोण

के बाद ही, जाति, वर्ग और जेन्डर–आधारित विश्लेषण मानवशास्त्रीय (Anthropological) शोध का भाग बना। इस इकाई में, इन दोनों पहलुओं–विलोपन (Neglect) व समावेशन (Incorporation) का विवेचन किया गया है। हम जाति, वर्ग व जेन्डर के अंतरसंबंधों को समझने में भारत में क्षेत्रीय भिन्नताओं के उदाहरणों पर भी नजर डालेंगे। शुरू में, मानवशास्त्र (Anthropology) नातेदारी आधारित समूहों के बीच के जैविक योजकों (Ties) व गठबंधनो (Alliances) से हावी था। नातेदारी अध्ययन नातेदारी परिभाषा को समझने के लिए खून व विवाह से जुड़े सदस्यों का व्यवहार और भूमिका वंशिक योजकों के अनुरेखन तक ही सीमित था। यह तो उत्तर–श्नेडर (Post-Schneider) सांस्कृतिक दृष्टिकोण के बाद ही, जैसा हमने पहले भी कहा, नातेदारी संबंधों को जैविक व गठबंधनो के बाहर समझने और रचित करने पर ध्यान–केंद्रित हुआ।

नातेदारी के सांस्कृतिक दृष्टिकोण को नारीवादी मानवशास्त्रियों द्वारा आगे विकसित किया गया, जो नातेदारी अध्ययन में जेंडर की भूमिका को लेकर आए। कोलियर और यानागिसाको (Collier and Yanagisako) ने अपने कार्य जेन्डर ऐन्ड किनशिपः टूवडर्स अ यूनिफाइड एनालिसिस (Gender and Kinship : Towards a Unified Analysis) में इस धारणा को चुनौती दी कि जेन्डर व नातेदारी बारीकी से जुड़े होने की बजाय अलग है। उनके अनुसार, नातेदारी, लिंग व जेन्डर को एक सांतत्यक (Continuum) पर समझा जा सकता है। गेल रूबिन (Gayle Rubin, 1975) ने कहा कि नातेदारी प्रणाली सामाजिक रूप से संगठित लैंगिकता (Sexuality) के ठोस प्रकारों से बनी है। इसलिए, नातेदारी प्रणालियाँ लिंग/जेन्डर प्रणालियों की प्रत्यक्ष व आनुभाविक प्रकार हैं। नारीवादी मानवशास्त्रीयों ने एक ऐसा ढांचा तैयार किया, जो जेन्डर–आधारित शक्ति संबंधों और महिलाओं के उत्पीड़न को जाति और वर्ग प्रभुत्व की संरचनाओं में स्थित

करता है। इसलिए जेन्डर के साथ–साथ जाति और वर्ग के पहलू भी नातेदारी नेटवर्क और संबंधों को समझने के अभिन्न अंग बन गए। विद्वानों ने नारीवादियों से सहमति रखते हुए महिलाओं को वर्ग के रूप में अपनाया, ना कि शरीर (Bodies) के रूप में जिस पर पुरुषों का अधिकार हो (रैडक्लिफ ब्राउन–Radcliffe Brown का जैविक दृष्टिकोण), और जो समाज के एकीकरण की ओर काम करें (लेवी–स्ट्रॉस–Levi Strauss–गठबंधन दृष्टिकोण)। नातेदारी अध्ययन में जाति, वर्ग व जेन्डर पहलुओं को शामिल करना, वाद–विवादो को प्रकृति/जीव–विज्ञान और संस्कृति के द्विभाजन के पार ले जाता है। यह माना जाता है कि मानव सामाजिक व्यवहार की पूरकता (Complementarity) मानव समाज की विशिष्ट विशेषता है।

7.2 जाति और नातेदारी

जाति शब्द का उद्भव स्पैनिश (Spanish) शब्द 'कास्ता' (Casta) से हुआ, जिसका मतलब है 'नस्ल' (Breed), प्रजाति (Race) और 'प्रकार' (Kind)। जाति, विशेष रूप से, भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाली स्तरीकरण की एक प्रणाली है। यह एक विशेष समूह में पैदा होने के कारण क्षेयित (Ascribed) अवस्था पर आधारित है। यह मनुष्य को विभिन्न समूहों में श्रेणीगत करता है, और इन समूहों को अलग–अलग व्यवसाय में निर्दिष्ट करता है। इसलिए, जाति को भी व्यवसायिक विभाजन और पदानुक्रम के रूप में देखा जाता है, क्योंकि व्यवसायों को पदानुक्रम मे अलग–अलग महत्व और अवस्था मिलती है। एम. एन. श्रीनिवास (M. N. Srinivas) ने जाति को एक वंशानुगत अंतर्विवाही, आमतौर पर स्थानीकृत समूह के रूप में परिभाषित किया, जिसका एक व्यवसाय के साथ एक पारंपरिक संबंध है, और जातियों के स्थानीय पदानुक्रम में एक विशेष स्थान है।

7.2.1 समानार्थी रूप में जाति और नातेदारी

नातेदारी प्रणाली पर शुरू के अध्ययन, जाति और नातेदारी को समानार्थक मानते हुए, उन्हें अदला–बदली कर उपयोग करते थे। इरावती कर्वे (Irawati Karve, 1965) ने जाति और नातेदारी को अविभाज्य (Inseperable) माना। उन्होंने कहा कि प्रत्येक जाति एक अंतर्विवाही इकाई है और किसी के भी अपनी जाति के बाहर कोई रिश्तेदार नहीं होते। इसी तरह लुई डयूमॉन्ट (Louis Dumont) ने दक्षिण भारतीय नातेदारी और विवाह के अपने अध्ययन में कहा कि जाति को नातेदारी से अलग नहीं किया जा सकता है।

कई क्षेत्रों में जाति और नातेदारी को अविभाज्य माना जाता था:

क) परिवार–नातेदारी प्रणाली जाति समूहों के परिवारों के भीतर संचालित होती है, जो एक गांव में या पास के गावों के समूह में रहते हैं;

ख) विवाह–जातियों का अंतर्विवाही (Endogamous) होना, यानी एक व्यक्ति अपनी जाति के भीतर विवाह करता है, इसका मतलब एक ही जाति के व्यक्ति नातेदार हैं, क्योंकि वे पहले से ही संबंधित हैं, या संभावित रूप से एक दूसरे से संबंधित हो सकते हैं; और

ग) प्रतिष्ठा और सम्मान (Status and Honour)–जाति–साथी आमतौर पर एक दूसरे की मदद करने के लिए आगे आते हैं, जब दूसरे लोग उनके सम्मान और प्रतिष्ठा को चुनौती देते हैं। वे एक साथ धार्मिक रिवाज़ (Rituals) भी कर सकते हैं, और आर्थिक तौर पर एक–दूसरे की मदद भी कर सकते हैं

उप–खंड में भी नातेदारी और जाति को अंतर्संबंध देखा जा सकता है। जाति का सबसे बड़ा भाग (Segment) उप–जाति है, और यह जाति के लगभग सभी कार्य संपन्न करता है, जैसे अंतर्विवाह और सामाजिक नियंत्रण। इस प्रकार उप–जाति की आंतरिक संरचना वह ढांचा प्रदान करती है, जिसके भीतर नातेदारी प्रणाली का संचालन होता है। एक उप–जाति के सदस्य नातेदारों सदस्यों के रूप में सहयोग करते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपना उत्तर मिलाइए।

1. जाति प्रणाली से आप क्या समझते हैं ?

_____

_____

_____

_____

2. जाति और नातेदारी पर इरावती कर्वे के विचार लिखिए।

_____

_____

_____

_____

7.2.2 अलग–अलग प्रणाली के रूप में जाति और नातेदारी

कैथलीन गो (Kathleen Gough, 1959) ने जाति और नातेदारी के बीच अंतर करने का प्रयास किया। तमिलनाडु के तंजौर (Tanjore) जिले के कुम्बाबेट्टई

(Kumbabettai) गांव के अपने अध्ययन में, उन्होंने ब्राह्मणों और आदि–द्रविडो के बीच पारिवारिक और नातेदारी संबंधों और मूल्यों के अंतर और असमानताओं को दिखाने का प्रयास किया। ब्राह्मण शिक्षा और रोजगार के लिए दूसरे शहरों में पलायन कर गए और निचली जाति के लोग आस–पास के क्षेत्रों से कुम्बाबेटृई में पलायन कर गए, और इस सब का परिणाम यह हुआ कि गांव व्यापक अर्थव्यवस्था के संपर्क में आ गया।

मेयर फोर्टेस (Mayer Fortes, 1959) स्पष्ट रूप से जाति और नातेदारी को अलग करते हुए तर्क दिया कि जाति बाहरी संबंध को संदर्भित करती है, जबकि नातेदारी घरेलू या आंतरिक संबंध को संदर्भित करती है। फोर्टेस के विभेदन को लागू करते हुए एंड्रियन मेयर (Adrian Mayer) ने मध्य–भारत में जाति और नातेदारी के अपने अध्ययन में तर्क दिया कि जाति आंतरिक संरचना से संदर्भित है, जोकि गांव के भीतर के संबंध हैं, जबकि नातेदारी गांव के बाहर के संबंधों को संदर्भित करती है। जाति के स्तर पर नातेदारी को अंतर्वैयक्तिक संबंधों (Interpersonal Relations) के रूप में देखा जाता है। इसलिए गांव के भीतर के सदस्यों को पितृवादी (Agnates) या रक्त के माध्यम से संदर्भित किया जाता है, और गांव के बाहर के सदस्यों को युटिराइन या अफिनल (Uterine or Affinal) या विवाह से जुड़ा कहा जाता है। इन दो प्रकार के रिश्तेदारों में भेद विवाह के नियमों में दिखाई देता है, जहां जाति के सदस्यों को अपने गांव के बाहर विवाह करने की आवश्यकता होती है, क्योंकि गांव के सभी सदस्य खून के रिश्तेदार होते हैं।

लीच (Leach, 1951) ने भी जाति और नातेदारी को विभेदित किया। जाति, लीच के अनुसार, राजनीतिक न्यायिक (Politico-jural) अधिकार–क्षेत्र (Domain) है,

और नातेदारी घरेलू अधिकार–क्षेत्र है। उदाहरण के तौर पर, पश्चिम बंगाल के जयानगर के डुले बगड़ी (Dule Bagdis) ने दोनों श्रेणियों को विशिष्ट रूप से विभाजित किया है–जाति–साथी (दलस्थ–Dalastha) और नातेदार (देजी–Deiji)। जाति–साथियों के पास बाहरी प्रतिष्ठा (Status) है, और नातेदारों के पास आंतरिक प्रतिष्ठा है।

7.2.3 जाति–नातेदारी संबंधः केस अध्ययन

गिरसिया (Giriasias–आमतौर पर जिसे जनजाति के रूप में माना जाता है), राजपूतों (जो एक जाति हैं) के पड़ोस में राजस्थान में रहते हैं; गिरासिया अपने आप को राजपूत जाति की शाखा होने का दावा करते हैं। कई मुद्दों में जब समूह खुद को श्रेणीबद्व या वर्गीकृत करते है, वह दूसरे समूहो द्वारा किए गए वर्गीकरण से मेल नहीं खाता। व्यवहार में गिरसिया कई सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक संस्थानों को क्षेत्र की दूसरी 'जाति' समुदायों और जनजाति 'भीलो' के साथ सांझा करते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि ये समूह अविभेद्य (Indistinguishable) है, लेकिन,'राजपूत' और 'भील' (Bhils) रूढ़ीवादी धारणाएओं का प्रयोग गिरसिया समूह के भीतर मतभेद की पहचान और मूल्यांकन को व्यक्त करने के लिए किया गया था। हालांकि, भारत में मानवशासत्रियों और समाजशास्त्रियों के बीच जनजाति/जाति विभेदन और उसी तरह दोनों में श्रम के विभाजन पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। गिरसिया के लिए पितृवंशीय (Patrilineal) नातेदारी और क्षेत्र उनकी 'जाति' पहचान की भावना में एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। यह अन्य समुदायों के विपरीत ('राजपूत' और भील को छोड़कर) है, जिनके लिए जाति में अधिक बिखराव है, व वह एक पितृवादी (Agnatic) व विवाह से जुड़ा समूह है। वंश (Descent) महत्वपूर्ण है। यद्यपि

उनकी नातेदारी विचारधारा पदानुक्रम की बजाय अलगाव की भावना पर जोर देती है। गिरसिया नातेदारी विभेदन सदस्यों का असमान रहने के समान अवसर प्रदान करते हैं।

वंशागत (Lineal) नातेदारी संबंधों पर बातचीत के लिए, चाहे वे जैविक योजकों पर आधारित हो या नहीं, एक प्रतिमान प्रदान करती है। इसके साथ ही, भिन्नता (Difference) की रचना के लिए जेंडर एक बोल–चाल शैली प्रदान करता है। वंश समूह को अलग–अलग रूप में उनके मूल्यांकन द्वारा देखा जाता है, जो इस पर निर्भर करता है कि वे किन समूहो से अपनी पत्नियों को लेते हैं। अपने बीच अंतर करने के लिए गिरसिया और बाहरी सदस्य, महिलाओं के पहनावे व व्यवहार, और कथित जेन्डर भूमिकायों का प्रयोग करते हैं।

गिरसिया नातेदारी व जेन्डर संबंधों की स्थानीय जटिलता के बावजूद, जिसे जाति और जनजाति की भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, बाहरी लोग (अन्य जातियाँ, वर्ग, सरकारी अधिकारी, शिक्षक) स्थानीय, क्षेत्रीय व राष्ट्रीय स्तर की जाति और जेंडर की राजनीति के परिणामस्वरूप, गिरसिया को हमेशा आदिवासी मानते हैं। (उन्नीथन–Unnithan, 1993)। एक और उदाहरण है उत्तर प्रदेश के मिरजापुर जिले के सर्जुपरी (Sarjupari) ब्राह्मणों का, इसे लुई डयूमोन्ट (Louis Dumont, 1966:107) ने अध्ययन किया। इस क्षेत्र के सर्जुपुरी ब्राह्मणों की तीन उप–जातियों को तीन घरों (नातेदारी समूह या वंशवली) में विभाजित किया गया है, जो प्रतिष्ठा के अनुसार, पदानुक्रर्मित हैं। विवाह हमेशा निम्न से उच्च घर में व्यवस्थित होते हैं। इसका अर्थ है कि महिलाओं को हमेशा उस परिवार में दिया जाता है, जो उनके घर से ऊंचा (प्रतिष्ठ) हो। यह स्पष्ट रूप से यह

दिखाता है कि उत्तर भारत में, ब्राह्मणों व उच्च जातियों में विवाह के नियम, वधू–देने वालों और वधु–लेने वालों बीच पदानुक्रमिक संबंध बनाए हुए हैं।

7.3 वर्ग और नातेदारी

वर्ग समाज के एक प्रतिष्ठा समूह को संदर्भित करता है। यहां प्रतिष्ठा से हमारा मतलब आर्थिक समृद्धि से है। इसलिए, वर्ग का अर्थ है एक व्यक्ति की समाज में आर्थिक स्थिति। मार्क्स ने वर्ग को उत्पादन के संसाधनों पर नियंत्रण रखने वाले सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया। मार्क्स के अनुसार, समाज में दो वर्ग–पूंजीवादी या बुर्जआ (Capitalist or Bourgeois) वर्ग (जिनके पास उत्पादन के साधन है) और श्रमजीवी वर्ग (Proletariat) (जिनके पास उत्पादन के साधन या श्रमिक वर्ग नहीं है) शामिल हैं। मैक्स वेबर के अनुसार, वर्ग केवल समाज में अर्थिक संबंधों का उत्पाद नहीं है, ऐसे अन्य कारक भी है, जो वर्ग को प्रभावित करते हैं, जैसे समाज में 'प्रतिष्ठा' (सामाजिक सम्मान या गौरव में सामाजिक समूहों के बीच अंतर) और 'पार्टी' (व्यक्तियों का एक समूह, जो इस तथ्य के कारण एक–साथ काम करें कि समाज में उनकी समान हालत, लक्ष्य या हित हैं)। वर्ग–आधारित समाजों में नातेदारी सामाजिक गतिशीलता को समझने के लिए उपयोगी है। नातेदारी प्रणाली में असमानता की समझ को वर्ग अधिक व्यापक बनाता है। आर्थिक पहलू के विश्लेषण ने वर्ग पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हुए, नातेदारी अध्ययन को पुनर्जीवित किया है। इसने संसाधनों, सामाजिक संगठन और अंतर–व्यक्तिगत संबंधों के बीच अंतर–संबंधों के विश्लेषण को अधिक गहन किया है।

7.3.1 वर्ग के पार नातेदारी

श्नेडर के अनुसार, सभी वर्गों की समान नातेदारी प्रणाली होती है। अपने अमेरिकी नातेदारी प्रणाली के अध्ययन में, उन्होंने मध्यम वर्ग का अध्ययन किया और यह सोच लिया कि निम्न वर्ग भी ऐसा ही है। हालांकि कैरोल स्टैक (Carol Stack) ने अपने अश्वेत या ब्लैक (Black) अमेरिकियों के अध्ययन में यह तर्क दिया कि निम्न वर्ग मध्य और उच्च वर्गों से भिन्न होता है। निम्न वर्ग में, रिश्तेदार सामान (Goods) साझा करने के साथ–साथ देखभाल और भावनाओं के लिए एक सहायता समूह (Support Group) बनाते हैं। जो जैविक रिश्तेदार इस नेटवर्क में शामिल नहीं होना चाहते, उनका बहिष्कार कर दिया जाता है। यहां वर्ग कारक नातेदारी संबंधों को निर्धारित करते हैं।

7.3.2 नातेदारी का आंतरिक पहलू

जनजाति समाज और मुखिया–प्रथा (Chiefdom) पर किए गए अध्ययन अक्सर इस बात पर जोर देते हैं कि कैसे नातेदारी संरचनाएं और घरेलू कार्य–क्षेत्र राज्य की नीतियों व्यापार और उपनिवेशवाद से प्रभावित हैं। रियटर (Reiter) ने ग्रामीण फ्रांस लोक–निजी कार्यक्षेत्रों में जो उत्तीर्ण कार्य किया वह यह दर्शाता है कि कैसे राज्य नीतियां ने निजी–लोक द्विभाजन का समर्थन करती है, खास–तौर पर श्रम विभाजन के संदर्भ में। महिलाओं को नातेदारी नेटवर्क के सेवन व प्रजनन के कार्य सोंपे जाते हैं। राज्य को ज्यादातर, जो औद्योगिक पूंजीवाद पर आधारित है, करो और श्रम शक्ति की आवश्यकता होती है, इसलिए अधिक व्यक्तियों की जरूरत होती है। दूसरी तरफ, मनुष्य आविष्कार और निर्माण के लिए जिम्मेदार है।

वर्ग–नातेदारी अंतः क्रिया (Interaction) पर एक अन्य अध्ययन नारीवादी विद्वान आइरीन सिल्वरब्लैट (Irene Silverblatt) का कार्य है। अपने शोध में वह 1988 में इन्का राज्य (Inca State) के सदृढीकरण के संदर्भ में, वर्ग गठन की प्रक्रिया का खुलासा करती है। उनका तर्क है कि नए राष्ट्र राज्यों के गठन के कारण जेंडर संबंधों का पुनर्लेखन हुआ है। इन्का के केस में पराजित समूहों को महिलाओं तक पहुंच यह दर्शाती थी कि समूह अब विजेताओं के अधीन है। नौकरशाही संगठनों के गठन ने (जो राष्ट्र राज्य के कार्य–पद्धति के लिए जरूरी है) जेन्डर संबंधों में भी बदलाव लाया। श्रम के लैंगिक विभाजन का स्थान लैंगिक पदानुक्रम ने ले लिया, जिससे राज्य के पुरुषों को योद्धा से राज्य प्रशासकों के रूप में बढ़ावा दिया गया। नौकरशाही संगठन में महिलाओं को सभी स्थानों से वंचित कर दिया गया और भूमि व संपत्ति के उनके अधिकारों से उन्हें अलग कर दिया गया। इस प्रकार राज्य के सदृढीकरण ने केवल पुरुषों को भौतिक लाभ प्रदान किए, और महिलाओं को पुरुषों पर आर्थिक रूप से आर्शित कर दिया। अपने अध्ययन में सिल्वरब्लेट (Silverblatt) ने राज्य और जेन्डर संबंधों का विवेचन चार पहलुओं से किया है। संसाधनों पर नियंत्रण, लैंगिकता पर नियंत्रण, प्रतिस्पर्धी पदानुक्रमों में हेरफेर, और जेन्डर और शक्ति का प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व।

इसी तरह, वॉट्सन (Watson:131) ने दर्शाया कि शक्तिशाली स्थानीयकृत पितृवंश (त्सू–Tsu) का विकास किसी भी तरह से पितवंशीय व्यवस्था का एक अनिवार्य परिणाम नहीं था, लेकिन इसका उद्भव उच्च स्तर के राजनीतिक केंद्रीकरण और आर्थिक असमानता के बीच हुआ, जहां ''एक छोटे–छोटा भूमि धारक व्यापारी वर्ग एक अधिक बड़े लघु–धारक किराएदार वर्ग पर हावी हो गया था'' (125:284)। यह उत्पादन का एक वंशावली तरीका नहीं था, लेकिन उत्पादन के सामाजिक

संबंधों को एक नातेदारी शैली में व्यक्त किया गया था, जो भाइयों (सदस्यों) के बीच एकता और समानता पर जोर देता था, जिससे वर्ग (और जेंडर) असमानताओं को पुनः उत्पन्न करने में मदद मिली।

7.3.3 वर्ग जेन्डर व नातेदारी

फ्रेडरिक एंगल (Friedrick Engle) का कार्य 'परिवार का उद्भव, निजी संपत्ति, और राज्य' (Origin of Family, Private Property and State) यह समझने में मदद करता है कि नातेदारी और वर्ग–आधारित उत्पादन के सामाजिक संबंध जेंडर भूमिका और प्रतिष्ठा को प्रभावित करते हैं। एंगेल्स ने जेन्डर असमानता का भौतिक सिद्धांत प्रस्तुत किया। इस ढांचे के अंदर, उन्होंने महिलाओं की स्थिति को समाज की मौजूदा आर्थिक और राजनीतिक स्थितियां के अनुसार, भिन्न–भिन्न स्थान और समय के रूप में देखा। उनका तर्क था कि महिलाओं की स्थिति हमेशा से अधीनस्थ नहीं रही है, जैसी आज है। यहां पर संदर्भ पूंजीवाद के हर जगह विकास से है और उन तरीकों से है, जिनसे पुरुषों के मुकाबले महिलाओं की स्थिति प्रभावित हुई है। वह उन तरीकों का पता लगाते हैं, जिसमें निजी संपत्ति के उद्भव ने पुरुषों और महिलाओं के बीच महिलाओं और काम के बीच संबंधों मे बदलाव हुआ है और ज्यादातर, संपत्ति के वर्ग और समाज से संबंधों की ओर।

वनीसा मेहर (Vanessa Maher, 1987) वर्ग आधारित समाज की असमानताओं के बीच पुरुषों और महिलाओं के आपस के संबंधों की जांच करती है। दो युद्धो के बीच के काल के टयूरिन (Turin) के उच्च फैशन उद्योग के श्रमजीवी वर्ग के दर्जियों (Seamstresses) के उनके अध्ययन ने यह बताया कि बुर्जआ और

श्रमजीवी वर्ग के बदलते हुए संबंधो ने घरेलु व सार्वजनिक क्षेत्रों की वैचारिक परिभाषा मे कितनी अस्पष्टता पैदा कर दी थी, जो दर्जी लांघ सकते थे। अपने उद्योगों को घरेलू करार करके उद्योगपतियों के श्रम कानूनों से बचने के लिए किए गए प्रयत्नों के कारण जवान महिलाओं को माता–पिता के निगरानी से स्वतंत्रता प्राप्त हुई। साथ ही, सिलाई के ज्ञान ने दर्जियो को यह समझाया कि अमीर महिलाए कैसे तैयार होती है, जिससे, वर्ग के पार, अपने पुरुष विश्वविद्यालय सहपाठियों के साथ इश्कबाजी की इजाजत मिल पाई। ऐसे ही, विवाहित सिलाई करने वाली दर्जी अपने घर में अपने पतियों की यह इच्छा कि वे घर मे रहे पूरा कर सकती थी; साथ ही, बुर्जुआ ग्राहकों की सेवा के लिए उनके परिवार के घर का उपयोग उनके श्रमिक वर्ग के पति की निजता (Privacy), आराम और पत्नी की सेवाओं पर एकाधिकार की इच्छा का उल्लंघन करता था।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपना उत्तर मिलाइए।

1. क्या आपको लगता है कि नातेदारी व्यवस्था वर्ग के अनुसार बदलती रहती है? उचित कारणों के साथ उत्तर दीजिए।

———————————————————————————————

———————————————————————————————

———————————————————————————————

———————————————————————————————

2. नातेदारी को समझने में जाति, वर्ग और जेन्डर के बीच अंतर–संबंध की विवेचना कीजिए।

_____

_____

_____

_____

_____

7.4 जेंडर और नातेदारी

_____

जेंडर संबंध अलग–अलग और बदलते नातेदारी संबंधों में अंतर्निहित है। नातेदारी की जटिलता वर्ग, वंश, संस्कृति और राष्ट्र पर आधारित महिलाओं की स्थिति के सामान्यकरण को चुनौती देती है। संस्कृति और समाज में महिलाओं को विभिन्न पद प्रदान करके नातेदारी जेंडर संबंधों को संदर्भित करती है। हालांकि, 1970 के दशक से पूर्व, नातेदारी अध्ययन ने जैविक और वैवाहिक संबंधों को समझने में जेंडर पहलू पर ध्यान नहीं दिया। केवल नारीवादी मानवशास्त्रियों के अध्ययनों के बाद ही नातेदारी संबंधों को समझने के लिए जेंडर के महत्व को पहचान मिली। महिलाओं की स्थिति व परिवर्तन की संभावनाओं को समझने के लिए मानवशास्त्रियों ने जेन्डर पहलू का प्रयोग किया।

7.4.1 नातेदारी अध्ययन में जेंडर का विलोपन

मानवशास्त्रियों द्वारा किए गए प्रारंभिक अध्ययन में नातेदारी शब्दावली और व्यवहार को समझने में महिलाओं पर ध्यान नहीं दिया गया। एक विश्लेषणात्मक श्रेणी के रूप में जेंडर मौजूद नहीं था, क्योंकि यह माना जाता था कि पुरुषों के अध्ययन में ही महिलाएं भी शामिल थी। महिलाओं की अदृष्यता का एक कारण अनुसंधान पद्धति या क्षेत्रीय शोध में निहित था, जिसमें शोधकर्ताओं ने केवल

पुरुषों की बात की। महिलाएं केवल परिवार व विवाह से जुड़े मुद्दों पर प्रतिवादी के रूप में दिख सकती हैं, क्योंकि यह माना जाता है कि ये उनके अभिन्न अंग है।

7.4.2 नारीवादी योगदान

1990s के बाद, नातेदारी अध्ययन को नई दिशा मिली, क्योंकि अधिक केंद्रण जेंडर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीको आदि के अध्ययन पर दिया जाने लगा। रेयटर (Reiter) के कार्यों में, जैसे 'महिलाओं के मानवशास्त्र की ओर' (Towards Anthropology of Women) रोडाल्डो और लेमफेयर (Rodaldo and Lamphere, 1974) के कार्य 'महिलाएं, संस्कृति और समाज' (Women, Culture and Society) ने नातेदारी को समझने में शक्ति संबंधों की गतिशीलता को शामिल किया। यह तर्क दिया गया कि केवल खून के रिश्ते और विवाहित समाज के सदस्यों को समझना ही काफी नहीं, शक्ति (Power) संबंध भी बहुत आवश्यक है। लिंडा स्टोन (Linda Stone) ने कहा कि नातेदारी संबंधों को गतिशीलता शक्ति संबंधों और मोल–भाव (Negotiation) संबंधों के रूप में देखा जाना चाहिए, ना कि वंश और गठबंधन की अमूर्त (Abstract) प्रणाली के रूप में। नातेदारी को धीरे–धीरे अधिकारों और कर्तव्यों के अलावा शक्ति (सत्ता), अधीनता और समाज में सत्ता या शक्ति हासिल करने की कार्यनीतियों के संदर्भ में समझा जाने लगा। पितृवंषीय व्यवस्था पर कोलियर (Collier) के कार्य ने महिलाओं को कार्यनीतियों के रूप में महत्व दिया, और यह तर्क दिया कि पत्नियॉ अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए पितृस्थानीय (Patrilocal) घरेलू समूह के साथ जुड़ी हुई है, क्योंकि वे अपने बेटों और पतियों के माध्यम से खुद को घरेलूता के बंधन से मुक्त करने के लिए काम करती है।

फ्रेडरिक एंगेल (Fredrich Engel) ने अपने कार्य 'फैमिली का उद्भव निजी संपत्ति और राज्य' (The Origin of the Family, Private Property and the State, 1884) में पितृवाद के उद्भव और महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति का कारण निजी संपत्ति के उदय को बताया है। उन्होंने तर्क दिया कि महिलाओं का उत्पीड़न समाज के वर्गों के विभाजन और राष्ट के उदय से हुआ। ऐंगल के अनुसार, पूर्व–पूंजीवादी समाज समतावादी थे और आर्थिक परिस्थितियों में विकास ने जेंडर असमानता को जन्म दिया। ऐंगल के सिद्धांत की आलोचना में, केरन सॉक्स (Karen Sacks) का तर्क है कि महिलाओं की स्थिति के पतन का कारण है शासक वर्ग के पुरुषों द्वारा साझा किए लाभ, जो तब भी थे जब आदिम साम्मवाद (Primitive Communism) का चलन था। वस्तुओं और मूल्यों के निर्माताओं का चयन शासक वर्ग से ही होता है और पुरुषों को लाभ होता है, क्योंकि वे घरेलू कार्यो से मुक्त होते हैं। महिलाओं के घरेलू कार्यो और पुरुषों के कार्यों में जो विभाजन है, वह ऐसी स्थितियां रचित करता है कि महिलाएं पूर्ण व्यस्क सदस्य की तरह विकसित नहीं हो पाती और पुरुषों पर निर्भर होने लगती हैं। नारीवादियों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भूमिका व स्थिति से जुड़ी धारणाओं को चुनौती दी। एनिट वेनर (Annette Weiner) के कार्य मूल्यवान महिलाएं और प्रतिष्ठावादी पुरुष' (Women of Value, Men of Renown, 1976) ने मेलिनोवस्की (Malinowski) द्वारा महिलाओं के आदान–प्रदान नेटवर्क (Exchange Network) की उपेक्षा का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया।

नातेदारी सिद्धांत में नारीवादी मानवशास्त्रियों का कार्य कुछ ऐसे द्विभाजनो को अस्वीकार करना था, जिनके उपयोग महिलाओं और उनकी स्थिति को अदृश्य कर दिया। सबसे महत्वपूर्ण द्विभाजन, जिसको अस्वीकारा गया वह था

निजी–सार्वजनिक द्विभाजन। इस तरह दो क्षेत्रों के बीच का यह द्वंद्व बहुत टिकाऊ रहा है। यह वंश सिद्वांत गठबंधन सिध्दांत और विवाह लेन–देन में मौजूद है। उदाहरण के तौर पर, वंश सिध्दांत एक अपवित्र्तनीय मां–बच्चे के बंधन की धारणा पर टिका हुआ है। यह मानता है की यह संबंध एक सर्वभौमिक संबंध है, जो हर समाज में मौजूद है, चाहे वह मातृवंशीय हो या पितृवंशीय हो। नैतिक, भावनात्मक विश्वासो पर आधारित मां और बच्चे का बंघन घरेलू इकाई का भाग है और वंश की परंपरा राजनीतिक–न्यायिक क्षेत्र का एक भाग है। इस द्विभाजन को जेंडर सबधों को समझने के लिए किया गया था, यह मानते हुए की घरेलू क्षेत्र लैंगिकता और बच्चों के पालन–पोषण को समार्पित था, जो मुख्य रूप मे महिलाओं से जुड़ा था, और सार्वजनिक क्षेत्र कानूनी नियमों और वैद्य अधिकारों को समर्पित था, जो मुख्य तौर पर पुरुषों से संबंधित थे।

महिलाओं और पुरुषों के बीच के आदान–प्रदान से संबंधित गठबंधन सिध्दांत, जो समाजिक समूह के बीच संबंधों की संरचना करता है, और घरेलू व सार्वजनिक क्षेत्रो के बीच अदान–प्रदान की भी बात करता है। लेवी स्ट्रॉस (Levi-Strauss), उदाहरण के तौर पर, वैवाहिक आदान–प्रदान के रूप के बारे में लिखते हैं, पर उनके तत्व (Content) के बारे में नहीं, क्योंकि उनके अनुसार, महिलाएं लैंगिक और घरेलू सेवाएँ प्रदान करती है, और उनके पास बच्चे पैदा करने का समान व अंतर्निहित मूल्य है, व पुरुषों के पास महिलाओं के आदान प्रदान (Exchange) का का वैध अधिकार है। पुरुषों और महिलाओं के व्यक्तित्व, कार्य और सामाजिक क्षेत्र को ऐसे ही स्वीकार करके जैसे वे दिखते हैं, और केवल उनके संरचनात्मक व्यवस्था यानी पदानुक्रम में भिन्नता देखते हुए (पत्नी–लेने वाले पत्नी–देने वालों से बेहतर हैं) लेवी स्ट्रॉस जेन्डर वर्गीकरण और संरचनात्मक व्यवस्था के गठन की द्वंद्वात्मक जांच करने में विफल रहे।

मानवशास्त्रीय साहित्य में, नातेदारी केवल घरेलु क्षेत्र तक ही सीमित थी, और अपने प्रजनन के प्राथमिक कार्य, व एकाकी (Nuclear) परिवार के गठन से ही संबंधित थी। हालांकि, प्रजनन कार्यो की धारणा को परिवार के मूल के रूप में स्वीकार कर, ऐसा दृष्टिकोण यह समझने में विफल रहता है कि आधुनिक समाज वंश–समाजों में वंश को कैसे समझ सकता है। यह समझ यह देखने में असफल है कि परिवार जेन्डर असमानता को किस प्रकार बार–बार उत्पन्न करता है, और साथ ही बच्चों का पोषण भी करता है। महिलाओं को घरेलू क्षेत्र और पुरूषों को सार्वजनिक क्षेत्र से जोड़ने वाली सामान्य धारणा को नारीवादी मानवशास्त्रीयों ने चुनौती दी। मेयर फोर्ट्स (Mayer Fortes) ने राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र से नातेदारी के बीच अंतर करने के लिए घरेलू और राजनीतिक–न्यायिक द्विभाजन का उपयोग किया। उन्होंने नातेदारी के जैविक आधार की पश्चिमी धारणा को चुनौती देते हुए, एक राजनीतिक–न्यायिक आयाम का विकास किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि नातेदारी का एक न्यायिक, राजनीतिक पहलू भी है। हालांकि कानूनी नियमों के आधार पर नातेदारी के न्यायिक क्षेत्र को विकसित करने में, फोर्ट्स ने मां–शिशु बंधन के भावनात्मक संबंधों और नैतिक प्रतिबंधों पर निर्मित घरेलू क्षेत्र की धारणा को अनछुआ ही रहने दिया।

मर्लिन स्ट्रैथरन (Marilyn Strathern, 1995) ने व्यक्तितत्व, जेन्डर और वंश के बीच संबंधों के महत्व को नातेदारी चर्चा का विषय बनाया। उन्होंने अपना शोध–कार्य पपुआ न्यू गिनी, मेलनेशिया (Papua New Guinea, Melanesia) में किया था। उनका उद्देश्य व्यक्तित्व की अंतर्निहित अवधारणाओं की संरचना और नातेदारी की संकल्पनाओं से इनके संबंधों की जाच¡ करना था। माउंट हेगन (न्यू गिनी का पश्चिमी हाइलैड्स-Mount Hagen-Western Highlands Province of New

Guinea) के लोगों के बीच नातेदारी लोगों से अलग भी हो सकती है, जो और लोगों और चीजें से जुड़ी होने की आदर्श स्थिति प्रदान करती है। महिलाएं, उदाहरण के तौर पर, अपने कुल से अलग हो सकती हैं और पति के कुल से जुड़ सकती हैं, जैसे वस्तुओं को अपने निर्माताओं से अलग किया जा सकता है और वस्तु पाने वालों की संपत्ति में जोड़ा जा सकता है। ये विसंबंधन के विचार ऐसे आधार उत्पन्न करते हैं, जो पत्नियों, धन की वस्तुओं और प्रतिष्ठा के संचयन के अवसर देते हैं, जिससे बड़े पुरुष बन सके। दूसरी ओर, वीरू 'Wiru' (पपुआ न्यू गिनी के दक्षिण उन्नत भूमि के एक ज़िला में), महिलाएं अपने गांव के रिश्तेदारों से अलग नहीं होती, बल्कि उनके विवाह, संबंधियों (Affine) मे संबंध स्थापित करते हैं। इसलिए, हम देख सकते हैं कि वीरू और माउंट हेगल के समाजों में अलग प्रकार की संस्कृति और राजनीतिक गतिशीलता है, जो इन समाजों को बनाती है, जो पितृवंशीय विचारधारा को सांझा करते हैं। इसी तरह, मानवशास्त्री शपिरो (Shapiro) दर्शाते हैं कि कैसे, अमरिका में पितृवंशीय वंश का उद्भव वंशावली संबंधों से न जुड़कर, पुरूषत्व (Masculinity) की सांस्कृतिक रचना से जुड़ा है, जिसका मतलब है कि राजनीतिक और धार्मिक संगठनों के लिए पितृपक्षीय (Agnatic) योजकों का प्रयोग होता है।

अभी तक की चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि नारीवादियों ने निजी और सार्वजनिक के द्विभाजन को पुनः परिभाषित किया। उन्होंने तर्क दिया कि यह महत्वपूर्ण है कि हम द्विभाजन पर ध्यान देने की बजाय, नातेदारी के अध्ययन पर सवाल उठाए व जेन्डर और नातेदारी को एकीकृत इकाई के रूप में समझे। नारीवादियों ने प्रजनन के घरेलू क्षेत्र होने की धारणा पर सवाल उठाए। सरोगेसी (Surrogacy), आई वी एफ (-IVF-In-Vitro Fertilisation) के आगमन से प्रजनन

घरेलू क्षेत्र के बाहर ले जाया जा सकता है। इस प्रकार नातेदारी व जेन्डर न केवल जैविक रूप से बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी रचित होते हैं।

7.4.3 नातेदारी अध्ययन में नई दिशा

1990 के पश्चात, नातेदारी अध्ययन में नई दिशा आई है, क्योंकि ध्यान का केंद्र अब अधिक जेन्डर, व्यक्तित्व समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों का अध्ययन हो गया है। अब अधिक जोर इस बात पर दिया जा रहा है शक्ति और अधीनता के विभिन्न पहलुओं के रोजमर्रा के अनुभवों और प्रतिनिधित्व को दर्शाया जा सके। अंतर्विरोधों, विरोधाभासों और द्वैतवाद (Contradictions, Paradoxes and Ambivalence) के विषयों पर भी ध्यान देने का प्रयास हो रहा है। कुछ ऐसे क्षेत्र हैं, जिनमें नातेदारी अध्ययन ने ध्यान देना शुरू किया है; यह है:

i) प्रासंगिक धारणाओं का पुनः परीक्षण

के. सारदामणि (K. Sardamani, 1999) ने अपने शोध–कार्य 'मातृवंशीयता में बदलाव' (Matriliny Transforming) में जेन्डर परिपेक्ष्य द्वारा मातृवंशीयता की अवधारणा की फिर से जांच की है। उनका तर्क है कि विरासत, उत्तराधिकार, विवाह और परिवार के विभिन्न कानूनों के कारण केरल के नायरो (Nayars) के बीच मातृवंशीय शासन में परिवर्तन हुए हैं।

ii) विवाह संस्था की पुनर्व्याख्या

नारीवादी विद्वानों का मानना है कि कैसे गठबंधन या विवाह महिलाओं के लिए अधीनता की एक प्रक्रिया है, जिससे वे उन समूहों, जैसे जाति व उप–जाति के हाथों में एक संसाधन बन जाते हैं, जिनके वे सदस्य हैं। जैसा कि गैल रूबिन

(Gayle Rubin) ने कहा है, महिला का आदान–प्रदान लघु रूप से यह दर्शाता है कि नातेदारी प्रणाली के सामाजिक संबंध यह निर्दिष्ट करते हैं कि महिलाओं नातों में पुरुषों के पास कुछ अधिकार है, लेकिन पुरुष नातों में महिलाओं के पास समान अधिकार नहीं... 'यह एक ऐसी प्रणाली है, जहां महिलाओं के पास अपने लिए पूर्ण अधिकार नहीं (1978)

रेमंड स्मिथ (Raymond Smith) का यह मानना है कि वेस्ट इंडियन क्रियोल समाज (Creole Society) में, 'विवाह' व 'अस्थायी मिलन' को विभिन्न प्रकार के मेल समझा जाता था। यह विभेदन एक वर्ग आधारित वर्गीकृत समाज में वंश, वर्ग और जेन्डर असमानताओं के अंतः क्रिया पर आधारित था। इसलिए स्मिथ के अनुसार, विवाह अलग से अध्ययन के लिए बहुत जटिल है, और इसलिए विवाह और सामाजिक संस्थाओं के सह–संबंध का अध्ययन जरूरी है। वह कहने की कोशिश करते हैं कि एकविवाही एकल परिवार (Monogamous Nuclear Family) को प्राप्त करने के लिए अस्थाई मिलन सिर्फ असफल प्रयास नहीं है।

iii) मां शिशु के बंधन पर सवाल उठाना

1980 के दशक तक नारीवादी मानवशास्त्रियों ने यह खोजना शुरू कर दिया कि अगर मा¡–शिशु संबंध के मानव प्रजनन के पार और दूसरे उद्देश्य हो सकते हैं, जैसे आर्थिक, राजनीतिक व वैचारिक। परिणामस्वरूप, उन्होंने मा¡–शिशु बंधन पर सवाल उठाना शुरू कर दिया, साथ ही सवाल उठा प्रत्यक्ष पुरुष अधिकार और सामाजिक ढांचे में शक्ति और प्रतिष्ठा के असल गतिशीलता पर। इसके अलावा, अर्थ की बड़ी प्रणाली में ही जैविक सच अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। यह स्पष्ट रूप से जैक गुड्डी (Jack Goody) के शोध कार्य में दिखाई देता है, जहां घरेलू समूहों को आकार प्रजनन प्रक्रियाए¡ और संपत्ति के संचरण द्वारा दिया

जाता है। इसलिए, हम देखते हैं कि नारीवादी बताते हैं कि जेन्डर व नातेदारी कैसे परस्पर रचे जाते हैं। वे इस धारणा को भी चुनौती देते हैं कि प्राकृतिक अंतर (प्रजनन की क्षमता) के आधार पर जेन्डर के बीच अंतर को पूर्व–समाजिक और मौजूदा संस्कृति के पार कैसे देखते हैं। इसके अलावा, नारीवादी पुरुष और महिला के श्रेणियों के द्विभाजन को नकारते हैं।

बोध प्रश्न 3

नोट :–i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिये गये स्थान का प्रयोग कीजिए।

ii) इकाई के अंत में दिये गये उत्तरों से अपना उत्तर मिलाइए।

1. विवेचन कीजिए कि कैसे नारीवादी मानवशास्त्रियों ने नातेदारी अध्ययन को पुनः रचित करने में योगदान किया है।

   _____

   _____

   _____

   _____

2. एक लघु नोट लिखिए कि कैसे नई प्रजनन तकनीकों ने मातृत्व और मातृभाव का अर्थ बदल दिया है।

   _____

   _____

   _____

   _____

7.5 सारांश

नातेदारी संबंधों को जाति, वर्ग और जेन्डर पहलू कई तरीकों से प्रभावित करते हैं, इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि इनकी परस्परता को समझा जाए। यह दृष्टिकोण मानवशास्त्र शोध में प्रभावी हुआ जब डेविड श्नेडर ने नातेदारी को एक सांस्कृतिक प्रक्रिया के रूप में दर्शाया। तब तक, नातेदारी अध्ययन वंशावली, वंश और वैवाहिक संबंधों के अध्ययन तक सीमित था। यह सांस्कृतिक दृष्टिकोण को नारीवादी मानवशास्त्रियों द्वारा और आगे बढ़ाया गया। नारीवादियों का ध्यान–केंद्र नई प्रजनन तकनीके और उनके जेन्डर पहलुओं से संबंध पर था। इन तकनीकों में मातृत्व, मातृभाव व वंश की अवधारणाओं की समझ पर प्रभाव डाला। 1990s के पश्चात नातेदारी अध्ययन में नई दिशा आई है, जिसमें अधिक ध्यान जेन्डर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों पर है।

7.6 संदर्भ

1. Collier, J. F., &Yanagisako, S. J. (1987). *Gender and Kinship: Essays Toward a Unified Analysis*. Stanford University Press.
2. Engel Fredrick (1884), *The Origin of the Family, Private,Property and the State*. Verso Books.
3. Dube Leela(1996). Kinship and Gender in South and Southeast Asia: patterns and contrasts.
4. Dumont, L. (1980). *Homo Hierarchicus: The Caste System and Its Implications*. University of Chicago Press

5. Fortes, M. (1959). 331. Descent, Filiation and Affinity: A Rejoinder to Dr. Leach: Man, 59, 206-212.Gold, Ann Grodzins, 1994, *Listen to the Heron's Words: Re-imagining Gender and Kinship in North India*, Delhi: OUP, Pp 30-72
6. Goody, J. (Ed.). (1975). *The Character of Kinship* (Vol. 17). Cambridge University Press.
7. Gough, E. K. (1959). "The Nayars and the Definition of Marriage". *The Journal of the Royal Anthropological Institute of Great Britain and Ireland*, 89(1), 23-34.
8. Karve, Irawati(1965).*Kinship Organization in India*, Asia Publishing House, Asia Publishing House.
9. Leach, E. R. (1951). *The Structural Implications of Matrilateral Cross-cousin Marriage.* The Journal of the Royal Anthropological Institute of Great Britain and Ireland, 81(1/2), 23-55.
10. Lévi-Strauss, C. (1969). *The Elementary Structures of Kinship* (No. 340). Beacon Press
11. Maher, V. (1987). Sewing the Seams of Society. Gender and kinship: Essays toward a unified analysis, 132-159.
12. Mayer Adrian. 1960, '*Caste and Kinship in Central India: A Village and its Region*, London, Routledge & Kegan Paul
13. PalriwalaRajniand Carla Risseeuw (eds.), 1996,*Shifting Circles of Support: Contextualising Kinship and Gender Relations in South Asia and Sub- Saharan Africa.* Delhi: Sage Publications [pp.190-
14. Radcliffe-Brown, A. R., & Forde, D. (1980). African systems of kinship and marriage. Routledge.220].
15. Reiter (1975), '*Towards an Anthropology of Women'*Monthly Review Press (1975)
16. Rosaldo, M. Z., &Lamphere, L. (1974),*Women, Culture and Society*. Stanford University Press
17. Rubin, G. S. (2007). *Thinking sex: Notes for a radical theory of the politics of sexuality* (pp. 166-203). Routledge.
18. Sacks, K. (1974). Engels revisited: Women, the organisation of production, and private property. In *Woman, culture, and society*, 133, 207.
19. K. Saradamoni, 1999.*Matriliny Transformed: Family, Law and Ideology in Twentieth Century Travancore*. New Delhi: Sage
20. Schneider, David Murray, 1964, *American Kinship: A Cultural Account*, University of Chicago Press

21. Schneider, D. M. (1984). *A Critique of the Study of Kinship*. University of Michigan Press
22. Silverblatt, I. (1988). Imperial dilemmas, the politics of kinship, and Inca reconstructions of history. In *Comparative Studies in Society and History*, 30(1), 83-102.
23. Strathern, M. (1995). Women in between: Female roles in a male world: Mount Hagen, New Guinea. Rowman & Littlefield.
24. Unnithan, M. (1993), Girasias and the politics of difference in Rajasthan: 'caste', kinship and gender in a marginalised society. *The Sociological Review*, 41: 92–121. doi:10.1111/j.1467-954X.1993.tb03402.x
25. Weiner Annette work (1976), *Women of Value, Men of Renown*, Univ. of Texas Press

7.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) 'जाति' शब्द स्पेनिश शब्द 'कॉस्टो' (Casta) से लिया गया है, जिसका अर्थ है– 'नस्ल', 'वंश' व प्रकार। जाति व्यवस्था, विशेष रूप से, भारतीय उपमहाद्वीप में पाई जानी वाली स्तरीकरण की एक प्रणाली है, जहा¡ व्यक्ति को जन्म के आधार पर, चार वर्णों में की सदस्यता दी जाती है। निर्धारित सदस्यता के आधार पर व्यक्ति को व्यवसाय सौंपा जाता है। इस प्रकार जाति व्यवस्था व्यक्तियों को अलग–अलग व्यवसायों में निर्दिष्ट करते हुए विभिन्न समूहों में वर्गीकृत करती है।

2) इरावती कर्वे भारत को चार सांस्कृतिक क्षेत्रों में विभाजित करके जाति और रिश्तेदारी के बीच संबंधों की जांच करने के लिए तुलनात्मक विश्लेषण का उपयोग करती है। विभेदन से पता चलता है कि समाज में समाजिक व्यवहार के विभिन्न क्षेत्रीय प्रतिमान क्या है। जाति विभिन्न प्रकार की हैं, क्योंकि पदानुक्रम व

जाति विभेदन और विभाजन है। नातेदारी के क्षेत्र में कर्वे सामंजस्य व संस्कृतिकरण की सभी प्रक्रियाओं पर ध्यान देती है।

बोध प्रश्न 2

1) नातेदारी के अध्ययन को सांस्कृतिक दृष्टिकोण देने वाले डेविड श्नेडर के अनुसार, सभी वर्गों की नातेदारी व्यवस्था एक समान है। अमरिकी नातेदारी प्रणाली के अपने अध्ययन में, उन्होंने मध्यम वर्ग का अध्ययन किया और माना कि यह निम्न वर्ग जैसा ही था। हालांकि, अपने अफ्रीकी अमेरिकियों के अध्ययन में केरोल स्टॉक यह तर्क देते हैं कि निम्न वर्ग में नातेदारी मध्यम व उच्च वर्गों से अलग है।

2) जेंडर, वर्ग और जाति का प्रतिच्छेदन, हमें विभिन्न समाजों के नातेदारी और नातेदारी संरचना के बीच संबंधों को समझने में मदद कर सकता है। ऐसा दृष्टिकोण महिलाओं को जाति व वर्ग के भाग के रूप में देखता और ना कि केवल शरीर के रूप में जिस पर पुरुषों का अधिकार है। (रैडक्लिफ ब्राउन का जैविक दृष्टिकोण) और जो समाज को एक–साथ जोड़ने का कार्य करता है। (लेवी–स्टार्स का गठबंधन दृष्टिकोण)। जाति, वर्ग और जेन्डर के पहलुओं को नातेदारी के अध्ययन में लेते हुए वादविवाद इस प्रकृति/जैविक व संस्कृति से परे ले जाता है। यह माना जाता है कि मानव सामाजिक व्यवहार की पूरकता मानव समाज के विशिष्ट विशेषता है।

बोध प्रश्न 3

1) 1990 के दशक में नातेदारी अध्ययन में एक नई दिशा आई है, जिसमें जेन्डर, व्यक्तित्व, समलैंगिक परिवार, नई प्रजनन तकनीकों और अन्य संबंधित मुद्दों के

अध्ययन पर अधिक ध्यान दिया गया है। यह तर्क दिया गया है कि न केवल खून के संबंध और विवाह संबंध है, जो समाज के सदस्यों के बीच संबंधों को निर्धारित करते हैं, बल्कि शक्ति (सत्ता) के संबंध भी निर्धारित करते हैं। नातेदारी को न केवल अधिकारों और कर्तव्यों के संदर्भ में बल्कि शक्ति, अधीनता और समाज में सत्ता और प्रतिष्ठा हासिल करने की कार्यविधियों के संदर्भ में भी समझा जाने लगा। नारीवादी मानवशास्त्री नातेदारी पर विचार–विमर्श में व्यक्तित्व, जेन्डर और वंश के बीच संबंधों की समझ को महत्वपूर्ण पाया।

2) नई प्रजनन तकनीकें पश्चिमी नातेदारी मॉडल में मुख्य तब्दीलियां लाई है। यह मॉडल खून के रिश्तो और वैवाहिक गठबंधनों पर जोर देता था। इन तकनीकों ने परिवार संरचना की गतिशीलता को प्रभावित किया है और जिस तरह से हम मातृत्व और मातृभाव की परिकल्पना करते हैं। नई प्रजनन तकनीकें नातेदारी को एक प्रक्रिया के रूप में देखने का एक माध्यम है, जो सांस्कृतिक घटनाओं और संबंधों द्वारा रचित होती है। जैविक या वैवाहिक आधार की आवश्यकता नहीं, क्योंकि ये धर्म निरपेक्ष रूप से रचित होती है।